सम्पर्क बुनियादी शाला में श्रम द्वारा शिक्षा

सम्पर्क संस्था 1988 में स्थापित की गई थी। मध्यप्रदेश की पश्चिमी सीमा पर राजस्थान व गुजरात की हदों पर लगा हुआ एक जिला झाबुआ है। यह जिला आदिवासी बहुलता लिए हुए है। अनेक गांव ऐसे है जो वास्तविक विकास से कोसों दूर हैं। संस्था का अस्तित्व व व्यक्तित्व दोनों पहलू पर दिखता है, संगठनात्मक कार्य व विकासात्मक कार्य। तकरीबन 90 गांवों में संस्था अपना कार्य कर रही है। सार्थक शिक्षा भी संस्था का एक मुद्दा है। 10 वर्षो तक सम्पर्क द्वारा कुछ गांव में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र संचालित होते रहे और आज भी 8 गांवों में वह चालू है, क्योंकि दस साल पहले तक कोई भी सरकारी शिक्षा योजना या शाला दूर–दराज के गांव तक पहुंच नहीं पायी थी। सम्पर्क के प्रयत्न से पालक–बालक का शिक्षा व शाला के प्रति सकारात्मक रूझान बना। आज गांवों में सरकारी शालाएं भी पहुंची है व योजनाएं भी। पालक–बालक उससे जुडने का प्रयत्न करते रहे है फिर भी समुदाय विशेष का कुछ सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक अस्तित्व होता है, उस अस्तित्व को बरकरार रखने में सरकारी शालाऐं या निजी शालाएं नाकामयाब रही है उसके अनेक कारण है। उसकी चर्चा अभी नहीं करते हुए सम्पर्क ने क्या किया यह देखेंगे। जब काम की शुरूआत हुयी तो सम्पर्क के सामने चरवाहा बालको के समूह थे जिसकी उम्र 6 से 14 साल तक थी।

वह सारे रात्रिशाला सम्पर्क में पढने आते थे। रात्रिशाला का शिक्षण पूरी तरह से कौशल विकास की प्रणाली पर आधारित था। जैसे–जैसे हर एक गांव के बालक शाला से जुडने लगे पालको को भी लगा चलो यह अच्छी बात है पर कुछ सालों बाद सभी गांवों की ग्रामसमितियां व शिक्षा समितियों के सदस्यों को महसूस हुआ कि जो बालक पढने में आगे तहसील या कालेज स्तर तक पहुंचता है वह अपने समाज व अपनी पहचान से कटता है व उसके रवैये में अचानक साहेबशाही दिखने लगती है, वह घरेलू कार्य, खेती कार्य व रोज ब रोज के अन्य कार्य करने का राजी नहीं, वह चाहता है उसको अचानक अच्छी नौकरी मिले। येनकेन प्रकार से धन मिलने लगे या कम मेहनत में अधिक लाभ मिले। गांवों में ज्यादा से ज्यादा बालक 5, 8, 10,12 वी पास नजर आते है। उन्हें न कोई काम मिलता है, न वह मजदूरी के लिए तैयार होता है न खेती कार्य से जुड़ पाता है। बड़ी नौकरी का तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। इस तरह से वह युवा होते–होते गलत कार्यों में फंसता है व कहीं का न होकर जिंदगी बिगाड़ देता है। यह समस्या अगर देखे तो पूरे देश में है। जिसकी जड़ में जाए तो समस्याओं का कारण सरकार की अभी तक तक की गलत शिक्षा नीति ही है।

आजाद भारत में आयी सरकारों ने हमेशा स्वार्थवश शिक्षा नीति ऐसी प्रकार की बनाई कि ज्ञान व श्रम अलग ही रहे। नयी सरकारों में जिनके पास जमीन, उद्योग, धंधे व बड़ी पूंजी थी उनकी ही ताकत चलती थी। कारीगर वर्ग या कौशल युक्त कार्य करने वाले भी शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा बन सकते थे यह बात नई सरकार को कतई पसंद नही थी और आज भी नहीं है। इसके बाद 1964 से 66 में आये कोठारी कमीशन ने कार्य और शिक्षा को जोड़ने का एक बडा मजाक किया उसका नाम "वर्क एक्सपीरिएन्स" दिया गया। हालांकि यह विचार हमारी भारत की धरती के शिक्षा के अनुभव से आधारित नहीं है व सोवियत रूस से आया विचार था। कार्यानुभव व समाजोपयोगी उत्पादन कार्य नाम का एक विषय शालाओं में जोडा गया वह सिर्फ कर्मकांड बनकर रहा। इसके बाद की सरकारी शिक्षा नीतियों के बारे में चर्चा का यहां स्थान नहीं है। सिर्फ यह बात देखेंगे कि वह ग्रामीणों की जो समस्या थी उसका थोड़ा बहुत हल सम्पर्क ने कहां खोजने का प्रयत्न किया।

सम्पर्क से जुड़े शिक्षण का काम करने वाले लोगों ने ग्राम समिति व शिक्षा समिति की बैठक बुलाकर उनके साथ बातचीत की। उनकी जरूरत, प्राथमिकता एवं उनके हिसाब से बालक कैसा तैयार हो उस पर चर्चाएं की गई। उनके हिसाब से कुछ बात मोटे तौर पर सामने आयी, वह थी –

1. हमारा बालक पढ़ते हुए अपने काम से न कटे।
2. अपनी पहचान अपने समाज में रहकर ही बनाये।
3. खेतीकार्य व अन्य रोजगार से भी बालक आगे चलकर जुडा रहे।
4. परीक्षा देने और पास होने के अलावा भी दूसरी कुछ जानकारी रखने वाला बने।
5. मनुष्य होकर मनुष्य का सम्मान करे।

सम्पर्क को लगा कि इन सारी बातों का हल गांधीजी की बुनियादी शिक्षा पद्धति में ही हो सकता है। सम्पर्क का शिक्षा के बारे में मानना है कि सीखना कुछ भी हो सकता है पर जो भी सीख रहे है उसकी समझ सीखने वाले और सीखाने वाले दोनों को होनी चाहिए। **समझ की परिभाषा परंपरागत रूप से देखे तो यह है कि आंकलन करने की, तर्क करने की बौद्धिक क्षमता।** यह क्षमता चीजो का वर्गीकरण करती है, वर्णन करती है, विवेचन और पहचान करती है, चुनाव कर अनुवादित करती है अवधारणाओं और ख्यालो को व्याख्यीत करती है।

ये सारी मन की क्षमताए हुई। वास्तविक समझ मानसिक शक्ति मात्र नहीं है, वह तो एक अनुभूति है जो हदय की गहराई में प्रतिध्वनित होती है। उदाहरण के तौर पर मूल उद्योग खेती द्वारा शिक्षा को ही ले, खेती की प्रवृत्ति से बालकों का अपने समाज के साथ जुड़ाव बना रहता है चाहे किसी के घर में खेती हो या नहीं होती हो। खेती के बिना तो मानव जीवन संभव ही नहीं, यह समझ बनती है। छोटे छोटे हाथ जब काम करते है तो कुछ करने का आनंद तो होता ही है साथ में गणित के सवाल या फसल चक्र व पर्यावरण के पहलू की समझ जल्दी से बनती है। बालक को लगता है यह खेत में आज निंदाई, गुडाई, मेरे द्वारा हो रही है। यह पौधें बढ़ेंगे, फल, साग, सब्जी तैयार होगी यह मेरे द्वारा संभव हुआ। इसी तरह खुद के प्रति सम्मान बढ़ता है। साथ में गणित भाषा, पर्यावरण विज्ञान के पहलूओं की जो समझ बनी वह कभी न भुलने वाली अनुभूति बन जाती है। सृजन का आनंद तो है ही, यह बात किताबी जानकारी से बढ़कर ही होगी, क्योंकि वह बालक के अस्तित्व की समाज में, शाला में शुभपुष्टि करता हैं इस प्रकार का आनंद बालक को परीक्षण व खोज की ओर भी प्रेरित करता है। हाथ व दिमाग के तालमेल से क्षमतावर्धन व सीखने की प्रक्रिया को गति मिलती है। इस प्रकार बालक कक्षा में बैठकर उबाऊ रूप से एक व्यक्ति को सुनते रहने की मजबूरी व हताशा से भी बचता है। यह बात दूसरे प्रकार की सभी गतिविधियों पर लागू होती है।

आवासीय बुनियादी शाला की प्रवृत्तियों पर सम्पर्क जो मानता है वह निम्नलिखित है

1. गतिविधियां बुनियादी शिक्षा पद्धति के उद्देश्यों की पूरक हो।
2. कोई भी प्रकार का श्रम या कार्य हो वह समाज उपयोगी या उसके द्वारा बालक अपने समाज को समझा सके, ऐसा हो।
3. श्रम बालक की वय और नन्हें हाथ की क्षमता के अनुरूप हो।
4. गतिविधियों द्वारा थोडा ही सही जो भी उत्पादन हो जो शाला व समाज में उपयोगी हो।
5. गतिविधियों की अति से बचना भी जरूरी है। क्रिया के लिए समय निर्धारण होना जरूरी है।
6. बुनियादी शाला की प्रवृत्तियां कोई कर्मकांड नहीं है कि यह कथा नहीं करेंगे या फलां यज्ञ नहीं करेगे तो भगवान प्रसन्न नहीं होंगे।
7. बालको के क्रियाकलाप स्वयंस्फूर्त हो तो बहुत अच्छा अगर वह न भी हो तो शिक्षक उसके लिए उत्प्रेरक हो सकता है। क्रियाकलाप के साथ बालकों को जोड़ने वाला शिक्षक रिंगमास्टर बनने से बचे।
8. गतिविधि में शिक्षक पूर्व तैयारी के साथ हो यह जरूरी है। क्रियाकलाप करते समय शिक्षक सार्थक प्रश्न की एक सूची अपने साथ रखे और बालको को कार्यकरण संबंधी पूछते हुए चर्चा करे। जरूरी समझा जाए तो कुछ बाते बालकों को अपनी कापी में दर्ज भी करवाये।
9. शिक्षक एक क्रियाकलाप के साथ सभी विषय को अनुबंध करते हुए बालको की समझ व कौशल को बढावा दे। शिक्षक की क्षमता यह भी होनी चाहिए कि वह बालको के साथ गतिविधि का हिस्सा भी हो।
10. जो शिक्षक विषय विशेष में महारत रखता हो वही उद्योग शिक्षक भी हो। उद्योग शिक्षक अलग न हो।
11. गतिविधियां बुनियादी शिक्षा पद्धति के आधारभूत सिद्धांत की पोषक हो।

इस तरह से सम्पर्क संस्था द्वारा आवासीय बुनियादी शाला की शुरूआत हुयी। सम्पर्क बुनियादी शाला में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चे व बच्चीयां है। उनके पालको की एक समिति का गठन हुआ है। सालभर में फीस के रूप में 145 किग्रा. गेहूं या मक्का और 10 किग्रा. दाल व 1500 रू. सालाना फीस पालको की समिति द्वारा तय हुआ है। उनके द्वारा यह भी तय हुआ कि बालको को साल भर में कितनी छुट्टी मिलेगी और कितनी बार पालक उनको मिलने संस्था में आएंगे । बालक के आरोग्य व अन्य जरूरतों का ध्यान प्राथमिक तौर पर संस्था रखेगी और विशेष संजोग में माता–पिता या ग्राम समिति के सदस्य का उत्तरदायित्व रहेगा। इस तरह से आवासीय बुनियादी शाला की काफी जवाबदारी समुदाय ने अपने जिम्मे ली। बालको द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग शाला, संस्था व समाज द्वारा समय समय पर होता है।

सम्पर्क बुनियादी शाला की गतिविधियां निम्नलिखित है :–

- ♣ मूल उद्योग–खेती
- ♣ रोजगार लक्ष्यी व कौशल उन्नति कारक कार्य
- ♣ उत्सव आयोजन
- ♣ शाला दैनंदिनी व सामूहिक श्रमदान व अन्य कार्य
- ♣ औषधि बनाना जड़ी बुटी एकत्रीकरण
- ♣ पुस्तकालय – कम्प्यूटर –खेलकूद

मूल उद्योग खेती :– खेती संबंधी श्रम बालको की वय व कक्षा के अनुरूप व अभिक्रमित अध्ययन के पहलूओं को लिए हुए है। संस्था की जमीन में एक जगह अमरूद का बगीचा है तो एक जगह पर मौसमी फसल बोई जाती है। यह पूरी जगह नदी किनारे है। पानी पिलाने का निंदाई, गुडाई, खाद तैयार करना, देशी जंतुनाशक बनाने के बारे जानकारी लेना आदि बातो में बच्चों का जुडाव है। जहां छोटी कक्षा के बालक (पहली व दूसरी कक्षा) फूल, पत्तीयां, बीज, कंकर–पत्थर

आदि से एकत्रीकरण, समूहीकरण, वर्गीकरण, पेटर्न बनाना, गीली मिट्टी से अक्षर और अंक बनाना सीखते है। कंकर पत्थर से गिनती, 10–10 की ठेरी बनाना, पौधों के आसपास पानी जमा रहे इसलिए छोटी क्यारी बनाना, पौधो की गिनती करके फसल की एक दो लाईन की निंदाई, गुडाई करना सीखते है। कक्षा तीसरी चौथी के बालक केंपस में कितने पौधे, कितने वृक्ष लगे है उसकी सूची बनाते है और कक्षा पांचवी के साथ बैठकर वहीं पेड–पौधों का मौसम, फूलना–फलना, औषधीय महत्व आदि को आधार रखकर वर्गीकरण करते है। पेड़ पौधे उसके उपर लगने वाले कीडे, अन्य जंतुओं का भी वर्गीकरण होता है। नाडेप कंपोस्ट का खड्डा तैयार किया जाता है। संस्था की मेस का जैविक कचरा भी उसी में डाला जाता है। उपरोक्त कार्य करते समय शिक्षक साथ में रहकर खुद भी खेती संबंधी कार्य करता रहता है। सार्थक प्रश्नों का पूछना, कार्यकारण संबंधी बातचीत करना, मौसम, फसल चक्र, पौधे का स्वरूप, फूल पत्तियों का स्वरूप, जड–तना, फल का बनना बीज से पौधे का तैयार होना आदि के वैज्ञानिक आधार की चर्चा होती है। हानिकारक व बिन हानिकारक कीट, उपयोगी कीट, उनका जीवन चक्र, पोषण कड़ी, पर्यावरण, हवा, पानी, बारिश मिट्टी आदि के बारे में बातचीत व प्रयोग होता है। खेत की लंबाई चौड़ाई मापना परिमाप, क्षेत्रफल, कोण विभिन्न आकार बंद आकृतियां, खुली आकृतिया, सममिति, त्रिकोण आयत, वर्गाकार, आदि पर बातचीत परीक्षण व खोज के आधार पर समझ बनायी जाती है। गणित के सवाल उपरोक्त प्रवृत्तियों के आधार पर बनाए व हल किए जाते है। बीज या तैयार फसल के नापतोल, वजनधारिता, खरीदी, बिक्री, लाभ–हानि, बिल बनाना सीखना, आदि शामिल है। भौगोलिक व ऐतिहासिक रूप से विशेष प्रकार की फसल सबसे पहले कहां हुयी थी? अपने देश में यह फसल की खेती कहां कहां होती है? कौन से राज्य में कौन सी फसल होती है? कौन सी फसल या सब्जियां मानव के लिए कितनी पोषक हो सकती है? आदि बातचीत व लिखना होता है। आवश्यकता अनुसार प्रायोगिक कार्य भी बच्चे करते है। आज हम खेत में गए तो वहां हमने क्या–क्या किया? उससे हम क्या–क्या सीखे? यह बात शिक्षक कभी बोलकर लिखवाता है तो कभी बालको को अपनी भाषा में लिखने को कहता है। शाला के शुरूआत के महीने में शिक्षक कभी ब्लेकबोर्ड पर लिखता है बच्चे देखकर लिखते है। अपने अनुभव का बोलकर बताना, सुनकर लिखना आदि भाषा के क्षमतावृद्धि के प्रयास है यह सब दूसरी गतिविधियों पर भी लागू होता है। यहां पर बालक और शिक्षक एक ही समुदाय से है। उन दोनो से शाला में आने से पहले अपने बडे बुर्जुग द्वारा सुने व खुद करके देखा हुआ खेती का एक अनुभव भी है जिसका आदान–प्रदान होता है। वैसे भी खेती अपने आप में एक प्रायोगिक कार्य ही है। कोई भी गतिविधि करते समय स्थानीय भीली व हिंदी भाषा का उपयोग बातचीत करने के दौरान होता है। यह बात बुनियादी शिक्षा पद्धति का एक सिद्धांत मातृभाषा द्वारा शिक्षण की एक पूरक है।

रोजगार लक्ष्यी व कौशल उन्नतिकारक कार्य

1. **मोमबत्ती बनाना :–**कच्चा माल खरीदा जाता है शिक्षक के साथ एक या दो बालक साथ में जाते है। शाला में लाने के बाद 1 किग्रा. के पैकेट तैयार किये जाते है जो बालक ही करते है। इस दौरान नाप–तोल व गणित संबंधित सवाल शिक्षक तैयार करता जाता है। उसी समय बच्चे भी कापी–पेन लेकर सवाल करते जाते है। 1 किलोग्राम से कितनी मोमबत्तियां बनेगी, एक मोमबत्ती का वजन कितना होगा। अगर एक मोमबत्ती का वजन 50 ग्राम है तो 500 ग्राम से कितनी मोमबत्ती बनेगी यह पहले अंदाजा लगाया जाता है फिर बाद में बच्चे शिक्षक से सवाल लेते है और उसे हल करते है। कभी कभी बच्चे आपस में सवाल बनाते है।

   तैयार मोमबत्तीयां बिकती है तो हिसाब भी बच्चों की जिम्मेदारी में रहता है। बनी हुई मोमबत्ती को बच्चे जलाकर देखते है कि कहीं मोम में हवा के बुलबुले तो नहीं रहे। उससे मोमबत्ती की गुणवत्ता बिगड़े नहीं उसका ध्यान रखा जाता है। इसी समय शिक्षक यहां पर चर्चा करता है कि मोमबत्ती जब जलती है तो इसमें क्या जलता है धागा या मोम या और कुछ होता है। मोमबत्ती का जलना एक रासायनिक प्रक्रिया है। उसकी लौ के कितने रंग है। नीले रंग की लौ बीच में ही क्यों दिखती है? आदि सवाल जवाब चलते है। जरूरत होने पर कापी में दर्ज करवाते जाते है। प्राकृतिक रूप से मोम कहां से मिलता है। हम जो मोम लाते है वह रासायनिक रूप से क्या है? मोमबत्तीयां बनाने के अलावा कहां–कहां उपयोग होता हैं?

   हमारी बनाई हुयी मोमबत्तीयां का हमारा समाज उपयोग करता है या नही। अगर करता है तो क्या वजह है? हमारे यहां आदिवासी समाज वर्षो से केरोसीन का उपयोग चिमनियां (छोटे कद के कंडिल) जलाने में करता आया है पर अभी से केरोसीन के लिए लाईन में खडा रहना पडता हैं जिससे समय बिगड़ता है व खेती के काम रूकते है क्योंकि अंदरूनी गांव के लोगो को बड़े कस्बे की शासकीय उचित मूल्य की दुकान तक आना पड़ता है। उसके मुकाबले मोमबत्तीयां सस्ता विकल्प है और धुंआ व काजल भी नहीं फेलता बच्चों के द्वारा ही यह बात मालूम हुई कि केरोसीन की चिमनी की लौ मे अधिक धुंआ उठता है व केरोसीन की दुर्गंध से खांसी व सिर दर्द होता है। बुनियादी शाला के उत्पाद का समाज में यह असर हमने बच्चों के द्वारा ही जाना।

2. **चॉक बनाना :–**बालको के द्वारा बनाया हुआ चॉक शाला में ही उपयोग होता है। इस गतिविधि के करते समय शिक्षक की हाजरी वहां होती है। बच्चे कच्चा माल यानी चॉक बनाने का पावडर को नापते तोलते है, घोल बनाते है, सांचे साफ करते है। इस समय भी शिक्षक चर्चा करता है। वह पावडर में क्या मिला रहा है? प्रकृति में कैल्शियम कहां से प्राप्त किया जा सकता है? चूना के पत्थरों की खदान हमारे देश में कहां है? हमारे शरीर में कैल्शियम की मात्रा सबसे ज्यादा कहां है? हडिडयां कमजोर क्यों हो जाती है? कैल्शियम की कमी से क्या–क्या हो सकता है? कौन–कौन से प्रकार के समुद्री जीव है जिनके कैल्शियम से बने खोल है? एक सांचे से 50 चोक बनते है उसके लिए कितना घोल तैयार करना पड़ेगा? वह कितने रूपये का होगा?आदि गणितिक सवाल तैयार किये जाते है। जोड–घटाव, गुणा–भाग जैसी गणितिक क्रियाऐं बहुत ही आसानी से सिखा पाते है।

3. **वाशिंग पावडर :–**वाशिंग पावडर बनाने के अंतर्गत बच्चो को यह बताया जाता है कि कास्टिक सोडा क्या है? अम्ल और क्षार क्या होता है? रोजबरोज के जीवन में अम्ल और क्षार कहां कहां पाये जाते है? चलो उसकी सूची बनाते है। वाशिंग पावडर से कपडे क्यों साफ होते है? या ऐसा क्या होता है कि कपडे साबुन व वाशिंग पावडर से साफ धुलते है?
इस पावडर का उपयोग बुनियादी शाला के बच्चे अपने कपड़े धोने में करते है व उनके घरों के लिए बनाते है। जहां जहां इसका प्रचार हुआ यानि बुनियादी शाला के बच्चो के गांव के लोग कभी कभी इसे खरीदते भी है।

4. **मार्बल पेंटिंग के ग्रीटिंग कार्ड बनाना :–**सादी ड्राईंग शीट लेकर नाप के अनुसार कटवा लिया जाता है और उसके ऊपर तैल रंगो द्वारा पेंटिंग होती है। बच्चों के तीन से चार समूह बना लिए जाते है। हर एक समूह के पास पानी से भरी एक तगारी तीन से चार रंग की डिब्बीयां होती है पानी पर रंगों के छींटे मारकर थोडा सा ब्रश द्वारा उसे गोल घुमा लिया जाता है। ऊपर कागज की शीट रखने से पानी पर बनी रंगों की पेटिंग कागज पर चढ़ जाती है। यहां पर शिक्षक तैल रंग, जल रंग के बारे में चर्चा करता है। क्या वजह है कि रंगों की पेंटिंग कागज पर उतर आती है? यह प्रश्न को लेकर बातचीत हाती है। मूल रंग कौन कौन से है? उन्हें एक दूसरे में मिलाने से कौन कौन से रंग तैयार किये जा सकते है। सूर्य प्रकाश में कितने रंग होते है? इंद्रधनुष बारिश के समय क्यों दिखता है? प्रिज्म के साथ न्यूटन ने क्या किया? क्या वजह है हमें कुदरत में अलग अलग रंग दिखते है? क्या मनुष्य से लेकर सभी प्राणियों को अलग अलग रंग दिखते है? क्या हम इंद्रधनुष को घर में ला सकते है या नहीं? करके देखे। बच्चे थाली में पानी भरकर अंदर आईना रखकर थाली को धूप में रखते है व कमरे की दीवार पर इंद्रधनुष को देखते है? अब यहां पर क्या हुआ जो धनकमाड़ या इंद्रधनुष दिखा? और बारिश में क्या होता है जब इंद्रधनुष दिखता है। शिक्षक चर्चा करता है।

5. **सिलाई :–**हाथ सिलाई, बटन टांकना, हुक लगाना, अपने फटे–उधड़े हुए कपडे सिलना होता है। कैसे सफाई पूर्वक छोटी बारीक तुरपाई की जा सकती है या हाथ से बारीक बखीया कैसे लगाई जा सकती है। मोटी पतली सुई और धागे के मोटे पतले होने पर सिलाई में क्या फर्क पड़ता है? मजबूत सिलाई कैसे हो सकती है? बच्चे व शिक्षक करते है। सिलाई मशीन चलाते सिखना पहले धागा पिरौना, बिना कपड़ा लगाये मशीन चलाना, बाद में पूराने अखबार पर सीधी मशीन चलाना। मशीन के कलपूर्जे के बारे में सामान्य जानकारी लेना। एक रूमाल बनाना है तो उसके लिए कितने बाय कितने का चोकोर टूकडा लगेगा? चौडाई कितनी कितनी होगी। पहले उसी लंबाई चौडाई का रद्दी अखबार का टूकडा काटकर देखते हैं? फिर कपडा काटकर उसकी किनारों को मोडकर तुरपाई करना सिखते है। यहां चौकर यानी क्या से लेकर दूसरे अन्य आकार जैस आयात, वर्ग, गोलाकार, त्रिभुज आदि पर बालक शिक्षक चर्चा करते है। परिमाप निकालना हो तो क्या करेगे? यह रूमाल की किनारो का एक पूरा चक्कर लगायेंगे तो हमारी उंगली ने जितनी दूरी तय की वह रूमाल का परिमाप होगा यानी परिमाप सभी भुजाओ की लंबाई का योग। रूमाल तो वर्गाकार है यानी चोकोर तो सभी भुजाओं की लंबाई एक समान होती है। इसी तरह कागज से अन्य आकार बनाते हुए त्रिकोण, आयत आदि का परिमाप निकालना सीखते है। क्षेत्रफल के लिए भी इसी तरह बातचीत करके क्षेत्रफल निकालना सिखते है।

उत्सव आयोजन :– हमारी शाला में राष्टीय त्योहार 15 अगस्त, 26 जनवरी के अलावा महापुरूषों की जन्मतिथि मनाते है। गांधी जयंती से लेकर सात दिन तक गांधी सप्ताह का आयोजन होता है। इस दौरान शाला के सभी बच्चों ने मिलकर किया कि एक कुटिया बनायेंगे। सबसे पहले बालको को समूह में विभाजित किया गया। कुल 5 समूह बने नाम थे स्वामी विवेकानंद समूह, चंद्रशेखर आजाद समूह, भगतसिंह, सुभाषचंद्र बोस व आचार्य विनोबा भावे समूह सभी ने यह तय किया था कि जैसे गांधीजी अनेक कार्य स्वयं करते थे उसी तरह हम भी सात दिन तक पूरे केम्पस, ऑफिस, बिल्डिंग, मेस में खाना पकाना, बर्तन मांजना मवेशी को पानी पिलाना, पाखाना व बाथरूम की साफ सफाई आदि अपने हाथों से करेंगे। सारे बालक उपरोक्त कार्य रोज करते है पर गांधी सप्ताह के दौरान उन्होंने दूसरे लोगो की जिम्मेदारी जहां जहां उपरोक्त कार्य में बनती थी वह अपने पर ली थी। बालको ने गांधी जयंती से पहले गांधी फिल्म देखी व उसके ऊपर शिक्षक के साथ चर्चा भी की। फिल्म द्वारा उन्होंने जो भी गांधीजी के काम के बारे मे जाना उससे सारे बालक उत्साहित थे। 30 सितंबर से ही कुटिया बनाने की तैयारी सभी समूह ने की।

कोई समूह लकडी और बांस काटकर ला रहा था तो कोई समूह कुटिया की छत बनाने के लिए क्या उपयुक्त रहेगा उसकी चर्चा कर रहा था। तीसरे और चौथे समूह ने कुटिया बनाने की जगह उसकी लंबाई चौड़ाई नापकर तैयार की। किसी ने चारबाजू बांस, गाडने के लिए उचित लंबाई के बांस काटे तो किसी ने खड्डे खोदे। लडकियों ने मिलकर कुटिया की फर्श बनाई अंत में उसे गोबर से सुंदर तरीके से लिपा गया। स्थानीय मांडने, गेरू और चूने से बनाए गए। संस्था ऑफिस से गांधीजी का सबसे बडो फोटो लाकर कुटिया में रखा गया। एक समूह यह बात लेकर आया कि अपने यहां जो चकमक त्रैमासिक बालकों की पुस्तक आती है।उसमें बापू के चित्र बने हुये है, क्यों न उसे भी बड़ा करके यहां कुटिया में लगाया जाए। यह भी बच्चो ने किया। सात दिन तक जल्दी सुबह तड़के ही प्रभातफेरी निकलती थी। सुबह शाम प्रार्थना व भजन कुटिया के सामने किए गए। रात को कोई एक समूह कुटिया के पास ही सोता था ताकी कुटिया को कोई जानवर आ के तोड न दे। सारे बालको को गांधीजी के प्रति स्नेह व आदरभाव देखते ही बनता था। सात दिनों के दरम्यान बालको के समूह पास गांव में रेली के स्वरूप में नारे लगाते जाते थे। वहां लोगों के आंगन, मोहल्ले व उकरडा (कचरा डालने की जगह) गंदी गलियां, ढोर बांधने की जगह आदि साफ करते थे। गांव के लोगों को समझाते थे साफ सफाई व स्वास्थ्य का महत्व। गांव वाले पहले तो यह सब देखकर चौंके उन्हें यह भी आश्चर्य था कि कोई शाला के बच्चे इस तरह का भी कोई काम करते है क्या? बाद में उन्हे भी जब सारी बात की समझ बनी तो काम को सराहा व बच्चों के साथ वे भी करवाने लगे। इसके साथ दो समूह के बालकों ने तीन गावं चुनकर समाज की कुरीतियो पर आधारित नुक्कड़ नाटको का प्रर्दशन किया व कुरीतियो से समाज को क्या हानि होती है समझाया। नुक्कड़ नाटक मे दो गांव मे अंध श्रृद्धा व कथित देवी चमत्कार के पीछे विज्ञान का क्या तथ्य है वह बताया। नुक्कड़ नाटक की विषयवस्तु थी नारियल से चुंदड़ी का प्रगट होना, बिना माचिस लगाये आग लग जाना, कुमकुम के पांव गीले कपड़े पर बन जाना। इसी तरह दशहरा पर सभी बालको की मांग थी कि हम रावण बनायेगे व जलायेगे। हम सभी शिक्षको ने मिलकर बच्चो के साथ रावण कौन था? क्या था? उसने ऐसा क्या किया कि लोग आज तक उससे नफरत करते है? आखिर यह समझ बनी कि जो गलत काम करते है वह समाज के लिए अनुचित व्यक्ति होता है। ऐसे गलत कार्य रावण कार्य ही होते है। बातो बातो मे यह बात भी सामने आयी कि गांव मे बी टी कॉटन बोने से किसान कर्ज दार है व नुकसान भुगत रहे है। बी टी काटन आया कहां से व इसे क्यो बोने लगें? इस बात की जवाब देने की जरूरत नही समझती हुॅ। इसके जवाब हम सभी जानते है। आखिर मे बालको ने कहा अभी अभी तो बी टी काटन ही रावण है इसलिए हम रावण बनायेगे और उसका नाम बी टी रावण रखेगे। बच्चो की टोलियां बनी सभी ने एक दूसरे का हाथ बंटाते हुए रावण बनाया। इस प्रक्रिया मे शिक्षक साथ मे ही थे। सही नाप की लकड़ी कागज इकट्ठा किया। रावण के दसमुख अलग अलग दस बच्चो ने बनाये। स्केच पेन व रंग से चेहरा बनाया व शरीर मे फटाखे भरे, रावण को खड़ा किया। रावण के पेट पर बच्चो ने बी टी काटन मुर्दाबाद लिखकर एक बड़ा पोस्टर चिपकाया। दशहरे के दिन तीन लड़को ने अनुक्रम से राम, लक्ष्मण व हनुमान की वेशभुषा मे सजकर जलता हुआ तीर चलाकर रावण को मारने का आनंद लिया। यह उत्सव आयोजन की क्रिया मे देखेगे कि गांधी सप्ताह, दशहरा मनाने के पीछे ना तो गांधीवाद थोपने का इरादा है ना राम रावण की मिथक को मानने का या ना तो कोई धार्मिकता थोपने का। उद्देश्य मात्र यही है कि बच्चे साथ मे मिलकर काम करे एक दूसरे के व्यक्तित्व व अस्तित्व का स्वीकार व सम्मान करे। पढ़ाई के अलावा उमंग व आनंद के साथ समाज व लोगो के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझे। पढ़ने वाले बालक साफ सफाई व अन्य कार्य के लिए राजी नही होते ऐसी गांववासियो की समझ को तोड़ने का एक मौका गांधी सप्ताह के दौरान बालको को मिला।

दशहरा मनाने की क्रिया एक उदाहरण है इसके अलावा हम सब शिक्षक समय समय पर बच्चो के साथ महाभारत, रामायण, पंचतंत्र. पुरानी कथा कहानियां त्यौहारो के पीछे के मिथको के ऊपर चर्चा करते है। समाज मे उपरोक्त बाते बहुत सालो से चलती आ रही है या इतिहास जो कहता है वह सब सच है? संत महात्माओ के विचार व सीख आदि के पीछे सच्चाई क्या हो सकती है यह समझने की कोशिश करते है। ऐसा हुआ था तो क्यो? उसके क्या संदर्भ थे? क्या अर्थ हो सकते है आदि का बच्चो की वय के अनुसार चर्चा करते है। ऐसा नही कि सिर्फ हिंदु धार्मिक कहानियो पर ही चर्चा की जाती है, अन्य धर्म संबंधी त्यौहार कथा कहानी पर भी चर्चा करते है व सच की संभावनाओ की तलाश रहती है। दिवाली से पहले हर शनिवार एक कालांश सिर्फ रांगोली बनाना सीखने का रखा गया। बिंदु वाली रांगोली से बच्चा अनेक प्रकार की आकृतियां पैटर्न बनाना सीखे व बिंदु की गिनती करनी पड़ती थी, इसमे छोटे बच्चो को बड़ा मजा आया। इससे प्रेरित होकर दिवाली की छुट्टियो मे अपने घर पर भी रांगोली बनायी। इस बात की उनके पालको ने भी सराहना की।

शाला दैनंदिनी व सामूहिक श्रमदान व अन्य कार्य :– प्रातः पांच बजे सारे बालक बालिकाऐ उठ जाते है। अपना नित्य कर्म करने के बाद कैम्पस की साफ सफाई ,शाला की साफ सफाई, पौधो को पानी पिलाना व मेस (रसोई) मे अन्य छोटे छोटे कार्य करवाना आदि कार्य श्रमदान से होते है। उपरोक्त कार्य प्रातः आठ बजे तक चलते है। मेस मे अनाज साफ करवाना, सब्जीयो को काटना, रोटी बनाना, आंटा गुंथना, आदि प्रकार के कार्य किये जाते है। रोटी बनाते हुए विज्ञान का **"ऊर्जा नही तो काम नहीं"** नाम का पाठ सिखाते है। ऊर्जा क्या है? उसके उपयोग क्या क्या है? ऊर्जा के स्त्रोत कौन कौन से होते है? ऊर्जा का संरक्षण किस तरह से हो सकता है? परंपरागत व गैर

परंपरागत ऊर्जा के बारे मे बातचीत शिक्षक उनके साथ बैठकर ही करता है। रसोई मे साफ सफाई का क्या महत्व है? अगर नही रखेगे तो क्या होगा? बिमारियां किस तरह से लग सकती है? अनाज को संरक्षित करने के प्राकृतिक तरिके क्या हो सकते है? पहले हमारा आदिवासी समाज कोदा, कांगणी, गुजरा, कुल्थी, जौ जैसे पौष्टिक बीज बोते थे, अब क्या बोते है? इस तरह से हमारी भोजन संबंधी आदतो मे बदलाव आये तो वो ठीक है या गलत। एक रोटी यानी एक, एक रोटी का आधा भाग यानी 1/2 इसी तरह से 1/3, 1/4, 3/4 .... भिन्नात्मक की समझ, भिन्नात्मक संख्याओ के जोड़ घटाव रोटी से ही मेस मे सीखने को मिल जाता है। शाला मे बालको की विभिन्न समितियां बनी हुई है –

1. **पानी समिति :–** शाला व बालको के उपयोग का पानी व पीने के पानी की व्यवस्था करना, पानी का बिगाड़ ना हो, उसका ध्यान रखना।

2. **साफ सफाई समिति :–** शाला के कमरे व शाला की चीजो को संभालना बाथरूम पखाने की साफ सफाई, झाड़ू पोछा लगाना आदि की जिम्मेदारी रखती है।

3. **स्वास्थ्य समिति :–** श्रमदान व खेलकूद करते समय दुर्घटना ना हो उसका ध्यान रखती है अगर किसी को चोंट लग जाती है या कुछ भी होता है तो यह समिति प्राथमिक ईलाज की व्यवस्था करती है व शिक्षक को सूचना देते है तथा बीमार बालक का ध्यान रखा जाता हैं। देशी दवाई व पट्टी कैसी करनी चाहिए इसकी सामान्य जानकारी रखती है।

4. **खेलकूद व सांस्कृतिक समिति :–** खेलकूद के साजो सामान, सांस्कृतिक गतिविधियो का साजो सामान को संभालकर रखना, जब भी खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियां संस्था मे हो तब उसकी पूरी जिम्मेदारी निभाने का काम करती है।

इन सारी समितियो के सदस्य बालको का प्रतिमाह बदलाव होता रहता है। रात मे सारे बच्चे जब पढ़ने बैठते है तो बड़ी कक्षा के एक बालक के साथ छोटी कक्षा के दो बालक रहते है। बड़ा बच्चा छोटे बच्चे को जरूरत अनुसार पढ़ाई मे मदद करता है। शाला के शुरूआती दिनो मे पुराने छात्र नये आये छात्र को अपने साथ रखकर शाला के नियम व अन्य बाबदो के बारे मे बताते है हर बच्चा एक दूसरे को सहयोग करने की भावना रखता है। अभी अभी के दिनो मे एक बालक के हाथ मे खेलते हुए चोंट आयी, प्लास्टर लगा वह अपना काम करने मे अक्षम था। तीन बड़े बच्चो ने उसकी जवाबदारी ली व तीनो अपने हाथो से उसे नहलाते थे व उसके कपड़े भी धो देते थे।

छात्र जीवन के यही फायदे है भाईचारा व बहनापा की भावना का विकास होता है। इसी तरह से स्वावलंबन व जिम्मेदारी की भावना की ओर मन प्रेरित होता है। सामुदायिक जीवन जीने की आदत व ओर भी बहुत कुछ। हर साल संपर्क संस्था मे बालमेला लगता है। उसमे भी कुछ कार्य की जिम्मेदारी बनियादी शाला के बच्चे ले लेते है। तकरीबन 25 गांवो से अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो व शासकीय शालाओ के बालक आते है। दो दिन अनेक भाषा क्षमता वृद्धि, गणित विषय की क्षमता वृद्धि, सिलाई, हस्तशिल्प, कठपुतली चलाना, बनाना, विज्ञान के अनेक प्रयोग करके देखना आदि होता है। बुनियादी शाला के बालक रात को अपनी ओर से नृत्य व नाटक द्वारा सभी बालको का मनोरंजन करते है। आये हुए बालक बुनियादी शाला के बालको के साथ मिलकर सबकुछ करते है इससे सीखने व सिखाने का उत्साह बढ़ता रहता है।

नाटक सिखने के लिए कुछ खास बिंदु इस प्रकार है –

- कहानी का चुनाव– पाठ्य पुस्तक की कहानी, पर्यावरण या परिवेश, घर मे होने वाली घटना का नाट्य रूपांतरण करना।
- कहानी का पठन
- कहानी से दृश्य बनाना
- एक दृश्य मे मंच सामग्री क्या लगेगी, सूची बनाना। इस दृश्य मे अभिनय की कहाँ कम ज्यादा उतार चढ़ाव चर्चा करना।
- दृश्य को अपनी भाषा मे लिखना।
- दृश्य को अपनी भाषा मे लिखना।
- दृश्य मे कितने पात्र (चरित्र) व उनके बीच क्या बातचीत होती है समझकर संवाद लिखने की कोशिश करना।

- दृश्य की कल्पना करके उसके अनुसार जो चरित्र निभाने जा रहे है उसके हावभाव आवाज आदि पर ध्यान करते हुए वह दृश्य करके देखना।
- भाषा उच्चारण की गलती सुधारते हुए शुद्व रूप से संवाद बोलने की कोशिश करना।
- अंत मे सारे दृश्य जोड़कर संपूर्ण नाटक की बार बार प्रैक्टिस करना।
- कभी जरूरत के हिसाब से मुखौटे बनाना।

यहां पर देखे तो पूरे बिंदुओ मे से भाषा की क्षमता वृद्धि के कितने सारे मौके है।

औषधि बनाना एवं जड़ी बूटी एकत्रीकरण :– शाला मे सुबह उठते ही बालको को मंजन की जरूरत होती है। बार बार बाजार जाना व मंजन के डिब्बे पेस्ट लाना महंगा पड़ता था। सोचा क्यो ना मंजन भी बना लिया जाये। मंजन के लिए गेरू, कपूर, लोंग और फिटकरी को प्रमाण अनुसार अलग अलग बारीक पीसकर कपड़े से छान लिया जाता है। फिर सभी चीजो को इकट्ठा करके बोतल मे भर लिया जाता है। हमारे क्षेत्र मे मलेरिया का प्रकोप सबसे ज्यादा होता है। इसके लिए बहुतायत मे नदी किनारे उगने वाली और जिसके पत्ते सुई के आकार के होते है ऐसा एक पौधा है जिसका नाम है कड़वी नाय (कड़वी नाव) है। इस पौधे की पत्तियो को बच्चे इकट्ठा करते है व छाया मे सुखाया जाता है। इसके साथ साथ नीम के पत्ते व तुलसी के पत्ते भी छाया मे सुखाये जाते है। सभी को अलग अलग पीसकर छानकर मिलाकर बोतल मे भर कर रखा जाता है और मलेरिया बुखार मे इस औषधी का उपयोग किया जाता है। यह एक परंपरागत देशी दवाई है जिसका सुपरिणाम भी देखने को मिलता है लेकिन लोग इसका उपयोग भूलते जा रहे है। बार बार फर्जी दवाखानो के चक्कर काटकर पैसा व समय बर्बाद करते है। कड़वी नाय के एकत्रीकरण व औषधि बनाने के समय शिक्षक साथ ही मे रहता है। मलेरिया क्या है? किससे होता है? मच्छरो का नाश करने के लिए क्या करना चाहिए? मलेरिया ना होने के लिए सावधानी क्या रखेगे? मलेरिया हो जाये तो कड़वी नाय के अलावा विशेष मे परिस्थितियो मे डॉक्टर के पास जाना चाहिए ना कि झाड़ फूंक करवाने वाले के पास, आदि बातो की चर्चा होती है। इस प्रवृत्ति के पीछे यही उद्देश्य है कि बच्चो मे अभी से ये आदत पड़े कि जो चीज घर मे बनायी जा सकती हो उसे बना लिया जाये। हमारी सुपरंपराओ का रक्षण हो व हमारे समाज मे जो आय के स्त्रोत कम है और जावक के साधन बहुत है और समाज का बाजार पर आवलंबन बहुत बढ़ता ही जा रहा है। उपरोक्त प्रवृत्ति से बच्चो मे थोडी सी ही सही बाजारवाद से विमुखता पैदा हो।

पुस्तकालय – कम्प्यूटर –खेलकूद :– शाला की छुट्टी के बाद खेलकूद का होता है गांव के पारंपरिक खेल फूटबॉल, बैठकर खेलने वाले, पज़ल्स, सांप सीढ़ी, चौसर, पांचे आदि खेलते है। सभी जानते है कि खेल के द्वारा बच्चो को शारीरिक व मानसिक विकास होता है। चौथी व पांचवी कक्षा के बच्चे कभी कभार शिक्षक के साथ कम्प्यूटर पर आ बैठते है। कम्प्यूटर के अलग अलग भाग और उनके कार्य आदि को समझते हुए लिखते है।

खेलकूद के बाद शाम का खाना खाने तक का समय पुस्तकालय का होता है। इसमे सभी बच्चे एक जगह बैठकर अनेक प्रकार की पुस्तक पुस्तिकाऐ पढ़ते है। शाला के पुस्तकालय मे बच्चो के लायक अनेक प्रकार की पुस्तको का संग्रह है। प्रत्येक शनिवार को प्रार्थना सभा मे **"मेरी मन पसंद पुस्तक"** या **"मेरी मन पसंद कहानी"** के बारे मे बताते है।

इस तरह से सम्पर्क बुनियादी शाला की सारी प्रवृत्तियां होती है व वह गतिविधियां अभिक्रमित रूप से विषयो की क्षमता वृद्धि बुनियादी शिक्षा पद्धति की पोषक और निरंतर शिक्षण कार्य लिए हुए है।